पुस्तक समीक्षा

पुस्तक	:	**आधुनिकता एवं नारी सशक्तिकरण**
लेखक	:	**वी.एन.सिंह एवं जनमेजय सिंह**
प्रकाशक	:	**जयपुर रावत पब्लिकेशन्स**
प्रकाशन वर्ष	:	**2010**
मूल्य	:	**675/– रुपये**

वी.एन. सिंह व जनमेजय सिंह की यह समीक्षित पुस्तक आधुनिकतावाद, उत्तर आधुनिकतावाद एवं नव आर्थिक उपनिवेशवाद में नारी सशक्तिकरण के बदलते आयामों को प्रस्तुत करती है। लेखक ने अपनी पुस्तक में उत्तर–वैदिक काल से आधुनिक युग तक नारी की विभिन्न प्रस्थितियों का चित्रण किया है। लेखक के अनुसार आज भी स्त्री अपने अस्तित्व और अधिकार के लिये संघर्ष कर रही है। पुस्तक में नारी की परम्परात्मक और आधुनिकतम समस्याओं के विभिन्न आयामों का प्रभावी प्रस्तुततीकरण किया गया है।

लेखक ने अपनी पुस्तक में जनजातीय नारी समाज के कल्याण हेतु चलाई जा रही सरकारी योजनाओं का भी परिचय दिया है। विकास के विभिन्न चरणों में नारी सशक्तिकरण की वास्तविक स्थिति का प्रस्तुतीकरण इस पुस्तक में किया गया है।

सम्पूर्ण पुस्तक **इक्कीस अध्यायों** में गठित की गई है। पुस्तक के प्रारम्भ में लेखक ने **'अंदाजे बयां है'** शीर्षक से एक कविता के माध्यम से नारी की दयनीय स्थिति का मार्मिक चित्रण प्रस्तुत किया है। **प्रथम अध्याय का शीर्षक**– ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में विकास की प्रक्रियाः 'आधुनिकतावाद, उत्तर–आधुनिकतावाद, नव आर्थिक उपनिवेशवाद' रखा गया है जिसमें विभिन्न कालखंडो में महिला जगत में हुए परिवर्तनों का उल्लेख किया गया है। इस अध्याय में उत्तर–आधुनिकतावाद को संक्रमण काल की संज्ञा देते हुए लेखक ने नारी के द्वंद्व को स्पष्ट करने का प्रयास किया है। लेखक ने शिक्षा के माध्यम से स्त्री के स्वावलंबी बनने की प्रवृत्ति को नारी सशक्तिकरण के लिए एक प्रेरणा स्रोत के रूप में बताया है। आधुनिक स्त्री पुरूष की दासी बनकर नहीं बल्कि पति की मित्र बनकर रहना चाहती है।

दूसरा अध्याय – ''नारी जगत की स्थिति का परिदृश्य (प्रोफाइल)'' में स्वतंत्रता से पूर्व एवं स्वतंत्रता के पश्चात् नारी परिदृश्य को उनकी जनसंख्या, स्वास्थ्य, पौष्टिक आहार, जन्म और मृत्यु दर, शिक्षा और रोजगार की दशा और स्थिति की चर्चा विभिन्न तालिकाओं के माध्यम से की गई है। महिलाओं के विरूद्ध अपराध हमारी संकीर्ण मानसिकता का परिचायक है, लेखक ने इस मानसिकता को स्पष्ट करते हुए सरकारी सुरक्षा एवं नारी संगठनों को प्रभावी ढंग से कार्य करने की आवश्कता बताई है।

तीसरा अध्याय – ''भारतीय नारी (अतीत और वर्तमान)'' में आदिमयुगीन समाज, पूर्व वैदिक समाज, वैदिक काल, उत्तर वैदिक काल, बौद्ध काल, मध्ययुगीन समाज, पुनर्जागरण काल व ब्रिटिश काल में नारी की स्थिति का वर्णन किया है। लेखक के अनुसार पूंजीवादी–व्यवस्था पर अंकुश लगाकर ही निम्न और मध्यम वर्ग की नारियों का कल्याण संभव है।

चौथा अध्याय – ''नव आर्थिक उपनिवेशवाद'' में आधुनिकतावाद, उत्तर आधुनिकतावाद और नव आर्थिक उपनिवेशवाद के आर्थिक ढाँचे के निर्माण में योगदान को बताया है। नव आर्थिक उपनिवेशवाद पूर्णतया अर्थ और उपभोक्ता समाज पर केन्द्रित है। लेखक ने इसी सोच के आधार पर उन परिस्थितियों का आंकलन इस अध्याय में किया है जिन्होंने स्त्री को शक्तिशाली बनाने के लिए प्रोत्साहित और प्रेरित किया है।

पाँचवा अध्याय– ''सूचना–क्रांति–मीडिया और स्त्री'' में मीडिया और नई स्त्री, मीडिया में स्त्री छवि, स्त्री मीडिया और व्यावसायीकरण के विविध पहलुओं को स्पष्ट किया है। लेखक के अनुसार भूमण्डलीकरण समाज में नारी भोक्ता और भोज्या दोनों है जो भारतीय समाज, संस्कृति और पारिवारिक संबंधों के लिए कहीं से भी उचित नही है।

छठे अध्याय – ''मानवाधिकार और महिलाएं'' में महिलाओं के आर्थिक, सामाजिक एवं सास्कृतिक अधिकार, भारतीय संविधान और मानवाधिकार, ग्रामीण समाज : स्त्रियाँ और मानवाधिकार, नगरीय समाज : स्त्रियाँ और मानवाधिकार, भारतीय परिदृश्य में मानवाधिकार तथा विश्व में मानवाधिकार की स्थिति आदि उपशीर्षकों के माध्यम से मानवाधिकारों की नारी सशक्तिकरण में महत्ती भूमिका का वर्णन किया गया है। लेखक के अनुसार अपने अधिकारों के प्रति चेतना भविष्य में नारी सशक्तिकरण का आधार बनेगी।

सातवॉ अध्याय – ''महिला सशक्तिकरण के आयाम'' में देश की आधी आबादी अर्थात् नारी के समुचित विकास की ओर ध्यान आकृष्ट किया गया है। लेखक के अनुसार नारी विकास के अभाव में प्रगति संभव नही है। पुस्तक में भारत में महिला साक्षरता की स्थिति और लैंगिक असमानता को तालिका के माध्यम से स्पष्ट करते हुए शिक्षा को महिला सशक्तिकरण का महत्वपूर्ण साधन बताया गया है।

आठवॉ अध्याय – ''पंचायतीराज और महिला सशक्तिकरण'' से संबंधित है जिसमें लेखक ने महिलाओं के राजनीतिक सशक्तिकरण में पंचायतीराज की भूमिका का वर्णन किया गया है। **नवम् अध्याय** – ''भारत में कामकाजी महिलाए'' में ग्रामीण एवं नगरीय समाज में कामकाजी महिलाओं की विशेषताएं एवं समस्याओं को आकड़ो के माध्यम से प्रदर्शित कियाहै। कामकाजी महिलाओं के यौन–उत्पीड़न को भी लेखक ने सरल भाषा में समझाते हुए महिलाओं की असुरक्षा की भावना को प्रदर्शित किया है साथ ही महिलाओं की सुरक्षा के लिए उच्चतम न्यायालय के दिशा–निर्देशों का भी उल्लेख किया है।

दशम् अध्याय – ''संबंधों का व्याकरण'' में पितृसत्तामक परिवार, शारीरिक श्रम करने वाली महिलाएं, बुद्धिजीवी कामकाजी महिलाएं, जाति, वर्ण और लिंग संबंधी असमानताएं उपशीर्षकों के माध्यम से लेखक ने यह स्पष्ट करने का प्रयास किया है कि बदलाव के साथ लैंगिक विषमताओं में वृद्धि होती है। लेखक ने 21वीं सदी में इस प्रकार के आर्थिक–मॉडल तैयार करने की सिफारिश की जिसमें लैंगिक विषमताएं कम से कम हो।

ग्यारहवें अध्याय से इक्कीसवें अध्याय तक में क्रमशः अपसंस्कृति बनाम नारी, देह–व्यापार का विशाल फलक, भारतीय समाज और स्त्री के विरूद्ध हिंसा, बलात्कार, घरेलू हिंसा और महिला जगत, महिला–कन्या भ्रूण हत्या, कन्या, दहेज और समाज, महिला (कानून, संविधान और समाज), नारी उत्थान में सरकारी योजनाएं, महिला आरक्षण की राजनीति अथवा राजनीति महिला आरक्षण की व जनजातीय समाज में नारी शीर्षकों में नारी से संबंधित ज्वलंत समस्याओं का विवेचन किया गया है। प्रस्तुत उपरोक्त अध्यायों में वर्तमान समय में नारी की समस्याओं के विभिन्न आयामों को सहजता के साथ प्रस्तुत किया गया है। जनजातीय नारी समाज के कल्याण के लिए संविधान और योजनाओं की भूमिकाओं की चर्चा लेखक ने अपने अंतिम अध्याय में की है।

इस पुस्तक में लेखक ने सरल, बोधगम्य भाषा का प्रयोग करते हुए नारी जगत के सभी पहलुओं को गंभीरता के साथ प्रस्तुत किया है। यह पुस्तक महिला सशक्तिकरण को ऊर्जा प्रदान करने के साथ–साथ एक नई दिशा प्रदान करने में मील का पत्थर साबित होगी। लेखक ने अपनी पुस्तक में नारी सशक्तिकरण में बाधक सभी तत्वों का मार्मिक, सहृदयता तथा तत्त्वान्वेषिणी दृष्टि से विचार व्यक्त किया है। एतदर्थ उन्हें साधुवाद। आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि प्रस्तुत पुस्तक समाजशास्त्र के विद्यार्थियों एवं शिक्षकों के लिए बहुत उपयोगी सिद्ध होगी।

समीक्षक
डॉ0 अन्जु बेनीवाल
व्याख्याता–समाजशास्त्र, राज. मीरा कन्या महाविद्यालय, उदयपुर (राज.)